विचार बिन्दु

फल की इच्छा छोड़कर निरंतर कत्तर्व्य करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कत्तर्व्य करतें हैं, उन्हें अवश्य मोक्ष प्राप्त होता है। –गीता

फास्ट मूविंग कंज्यूमर सेक्टर की ग्रामीण बाजार में बढ़ती धमक

इस समय का बदलाव ही कहा जाएगा कि फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स बनाने वाली कंपनियों के केन्द्र में अब ग्रामीण बाजार आने लगा है। एक समय था जब एफएमसीजी सेक्टर का ध्यान केवल और केवल शहरी और उनमें भी उच्च मध्य व उच्च आयवर्ग के लोगों तक सीमित था और यही कारण था कि उनका बिजनस केंपेन भी पूरी तरह से इस वर्ग पर ही केन्द्रीत रहता था। पर आज एफएमसीजी सेक्टर में ग्रामीण बाजार की अपनी धमक बनती जा रही है। हांलाकि आज क्या गरीब और क्या अमीर व क्या शहरी और क्या ग्रामीण सभी के जीवन स्तर व रहन सहन में तेजी से बदलाव आया है। अब दैनिक आवश्यकताओं को किसी भी तरह से पूरा करना नहीं होकर जीवन जीने और रहन सहन का तौर तरीका पूरी तरह से बदल कर रह गया है। लोग अच्छी वस्तुओं का उपयोग करना चाहते हैं। नील्सन आई क्यू की हालिया रिपोर्ट भी इसी और इशारा करती है। रिपोर्ट के अनुसार एफएमसीजी सेक्टर में शहरी खपत को ग्रामीण क्षेत्र ने पीछे छोड दिया है। मजे की बात यह है कि इस सेक्टर में भी खाने-पीने की वस्तुओं के स्थान पर अन्य दैनिक उपभोग की वस्तुओं सौन्दर्य प्रसाधन आदि की मांग बढ्ढी है।

दरअसल जिस तरह से आज लोगों तक वस्तुओं की सहज पहुंच होती जा रही है उसी का असर साफ तौर से बाजार में दिखाई देता है। मोटे रुप से समझने की कोशिश की जाए तो पैकिंग वाले खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, महिलाओं और पुरुषों की प्रसाधन सामग्री, साफ-सफाई यानी कि टॉयलेट्री के साथ ही कम लागत की घरेलू उपभोग की वस्तुओं को एफएमसीजी सेक्टर में लिया जाता है। वैसे तो आईटीसी इसका सबसे बड्डा उत्पादक और वितरक है पर तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि फास्ट मूविंग कंज्यूमर उत्पादों की मांग को देखते हुए स्थानीय स्तर पर भी मिलते जुलते रुप में उत्पादन और विपणन का कार्य होने लगा है। सबसे खास बात यह है कि फास्ट मूविंग कंज्यूमर उपभोग सामग्रियों में ब्राण्डेड के साथ ही स्थानीय निर्माताओ के उत्पादों से बाजार अटा पड्डा है। दूसरी यह कि अनेक उत्पादों के तो मिलते जुलते नाम या पैकिंग होती है जिससे उन्हें स्वत: बाजार मिल जाता है। आज कहीं भी किसी भी कोने में निकल जाओ पेय पदार्थों की ही बात करें तो कोका कोला, पेप्सी जैसे स्थानीय कंपनियों के उत्पाद आसानी से मिल जाएंगे। बिसलेरी के स्थान पर पीने के पानी की बोतल स्थानीय स्तर पर बनाई जाने वाली आसानी से मिल जाएगी। यही हालात साबुन, सर्फ, साफ सफाई के उत्पादों, फिनाइल आदि के मिल जाएंगे। दरअसल यहां कहने का अर्थ है कि अब ग्रामीण बाजार में ब्राण्डेड से लेकर स्थानीय उत्पादों की मांग तेजी से बढ्ढी है और लोग अपने बजट के अनुसार उत्पाद आसानी से खरीदने लगे हैं। इससे सीधे-सीधे बाजार पर असर पड्डा है। यही कारण है कि बड्डी कंपनियों ने पांच-दस रुपये के पैकिंग में खाद्य सामग्री के उत्पाद रखने लगी है। पांच रुपए में पारले जी से लेकर नमकीन, कुरकुरे और ना जाने इस श्रेणी के कितने ही ब्राण्डेड मिल जाएंगे। इस यों कहा जा सकता है कि उत्पादकों ने छोटे से छोटे लक्षित वर्ग को ध्यान में रखकर उत्पादों की पैकिंग व्यवस्थ सुनिश्चित की है ताकि उसका लक्षित उपभोक्ता वचित ना रह सके।

बड़ी कंपनियां भी पांच-दस रुपये के पैकिंग में खाद्य सामग्री के उत्पाद रखने लगी है। पांच रुपए में पारले जी से लेकर नमकीन, कुरकुरे और ना जाने इस श्रेणी के कितने ही ब्राण्डेड मिल जाएंगे। इसे यों कहा जा सकता है कि उत्पादकों ने छोटे से छोटे लक्षित वर्ग को ध्यान में रखकर उत्पादों की पैकिंग व्यवस्थ सुनिश्चित की है ताकि उसका लक्षित उपभोक्ता वचित ना रह सके।

इस सबके साथ ही जिस तरह से घर घर में टीवी चैनल्स, एंड्राइड मोबाइल की पहुंच हुई है और जिस तरह से सोशियल मीडिया ने छोटे-बड्डे सभी तक अपनी पहुंच बनाई है उससे बाजार को नई दिशा मिली है। सपने दिखाने वाले विज्ञापनों की चकाचौंध के चलते अब ग्रामीण क्षेत्र शहरों से दो कदम आगे ही हो गया है। यही कारण है कि लोगों को उत्पादों तक जानकारी पहुंच रही है और फिर भले ही स्टेटस सिंबल ही क्यों ना हो ग्रामीण लोग भी किसी से पीछे नहीं रहना चाहते हैं। इन सबको देखते हुए पिछले कुछ सालों से फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स क्षेत्र में कार्य कर रही कंपनियों ने शहरों में जहां दिग्गजों रिलायंस, डी मार्ट, विशाल, वी मार्ट और अमेजन, फ्लिपकार्ट जैसी बहुतेरी संस्थाओं से टाईअप करने पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा हैं वहीं ग्रामीण बाजार पर अधिक ध्यान देना शुरु किया हैं। बड्डी कंपनियों की ग्रामीण बाजार पर लगभग नहीं के बराबर पहुंच रहती थी और ग्रामीणों को ब्राण्डेड या अच्छे उत्पाद लेने के लिए शहरों की और रुख करना पड्डता था उसके स्थान पर अब गांव में ही इन उत्पादों की सहज उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। सबसे खास बात यह कि सहज उपलब्धता के कारण ग्रामीण बाजार में फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुडस कंपनियों की पहुंच लगता बढ्ढती जा रही है। आज तो हालात यह होते जा रहे हैं कि शहरी उपभोक्ताओं की तुलना में गांवों में इन कंपनियों को अधिक उपभोक्ता मिलने लगे हैं। हालिया रिपोर्ट में साफ हो गया है कि शहरी क्षेत्र की तुलना में गांवों-कस्बें के बाजारों में अधिक मांग आ रही है और फास्ट मूविंग कंज्यूमर सेक्टर की विकास दर शहरी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में अधिक तेजी से बढ रही है। इसे शुभ संकेत भी समझा जाना चाहिए तो दूसरी और ग्रामीण क्षेत्र में जिस तेजी से रहन-सहन व खान पान में बदलाव आ रहा है वह ग्लेमर के हिसाब से तो ठीक है पर परंपरागत खान-पान को छोड्डना और पैक्ड खाद्य व पेय पदार्थों को अधिक महत्व देना आने वाले समय के लिए चिंता का विषय अवश्य हो सकती है। क्योंकि पैक्ड उत्पादों के उपभोग से होने वाले साइड इफेक्ट से आज शहरी लोग दो-चार होने लगे हैं। इसलिए कहीं ना कहीं संतुलन बनाए रखना होगा।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

ग्रीन हाइड्रोजन- वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को शक्ति प्रदान करना

अशोक कुमार

ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रधानमंत्री ने देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन का एलान किया था!

ग्रीन हाइड्रोजन क्या है ?

ग्रीन हाइड्रोजन एक प्रकार का हाइड्रोजन है जो नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों जैसे सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग करके पानी से उत्पन्न होता है। यह हाइड्रोजन का एक स्वच्छ और टिकाऊ रूप है जो जीवाश्म ईंधन का विकल्प हो सकता है।

हाइड्रोजन प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला बेहद आम तत्व है, जो अन्य तत्वों के साथ संयोजन में मौजूद है। इसमें प्राकृतिक तौर पर पाए जाने वाले यौगिकों जैसे पानी (जो दो हाइड्रोजन परमाणु और एक ऑक्सीजन परमाणु के संयोजन से बनता है) से निकाला जाता है। हाइड्रोजन अणु के इस उत्पादन की प्रक्रिया ऊर्जा लेती है। हाइड्रोजन बनाने की यह प्रक्रिया इलक्ट्रोलिसिस कहलाती है। पानी के मामले में नवीकरणीय ऊर्जा (जैसे हवा, पानी या सौर ऊर्जा) का उपयोग करके पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विखंडन करके जिस हाइड्रोजन का उत्पादन किया जाता है उसे ही ग्रीन हाइड्रोजन कहा जाता है। ग्रीन हाइड्रोजन में ग्रे हाइड्रोजन की तुलना में काफी कम कार्बन उत्सर्जन होता है। ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग उन क्षेत्रों को डीकार्बोनाइज करने के लिए किया जा सकता है जो विद्युतीकरण के लिए कठिन हैं, जैसे स्टील और सीमेंट उत्पादन, और इस प्रकार यह जलवायु परिवर्तन को सीमित करने में मदद करता है।

ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन कई तकनीकों का उपयोग करके किया जा सकता है, जिनमें शामिल हैं:-

इलेक्ट्रोलाइसिस: यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पानी को बिजली का उपयोग करके हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित किया जाता है।

थर्मोकेमिकल चक्र: यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें गर्मी का उपयोग पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करने के लिए किया जाता है।

जैव-हाइड्रोजन उत्पादन: यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सूक्ष्मजीवों का उपयोग पानी को हाइड्रोजन में विभाजित करने के लिए किया जाता है। ग्रीन हाइड्रोजन में ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति लाने की क्षमता है। यह जीवाश्म ईंधन पर हमारी निर्भरता को कम करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।

ग्रीन हाइड्रोजन क्यों जरूरी है?

ग्रीन हाइड्रोजन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवाश्म ईंधन पर हमारी निर्भरता को कम करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। यह एक स्वच्छ, टिकाऊ और बहुमुखी ऊर्जा स्त्रोत है जिसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की आपूर्ति के लिए किया जा सकता है, जैसे:

परिवहन: ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन सेल वाहनों को चलाने के लिए किया जा सकता है, जो शून्य उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं।

ऊर्जा भंडारण: ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग ऊर्जा को स्टोर करने के लिए किया जा सकता है जब नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों से अधिक बिजली का उत्पादन होता है।

उद्योग: ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग उद्योगों में ऊर्जा और कच्चे माल के रूप में किया जा सकता है।

ग्रीन हाइड्रोजन के लाभ:-

स्वच्छ: यह जीवाश्म ईंधन का एक स्वच्छ विकल्प है जो शून्य उत्सर्जन उत्पन्न करता है।

टिकाऊ: यह नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों से उत्पन्न होता है, जो इसे टिकाऊ बनाता है।

बहुमुखी: इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की आपूर्ति के लिए किया जा सकता है।

ग्रीन हाइड्रोजन के सामने कुछ चुनौतियां:-

उत्पादन: ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन अभी भी महंगा है।

भंडारण: ग्रीन हाइड्रोजन को स्टोर करना मुश्किल है।

बुनियादी ढांचा: ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग के लिए बुनियादी ढांचे का विकास अभी भी प्रारंभिक चरण में है।

ग्रीन हाइड्रोजन का भविष्य:

ग्रीन हाइड्रोजन में ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति लाने की क्षमता है। यह जीवाश्म ईंधन पर हमारी निर्भरता को कम करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। सरकारों और कंपनियां ग्रीन हाइड्रोजन के विकास और उपयोग में निवेश कर रही हैं, और यह उम्मीद की जाती है कि यह भविष्य में ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत बन जाएगा।

-अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

'विश्वविद्यालय क्षेत्रीय इतिहास, सभ्यता और संस्कृति से जुड़े केंद्र स्थापित करने की पहल करें'

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की

बीकानेर, (निसं)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति के आलोक में देशभर में ऐसा वातावरण निर्मित करें, जिससे विद्यार्थी रोजगार पाने के इच्छुक बनने की बजाय रोजगार देने वाले बन सकें। उन्होंने विश्वविद्यालयों द्वारा स्थानीय विरासत को सहेजने-संवारने हेतु अपने परिसर में क्षेत्रीय इतिहास, सभ्यता, संस्कृति को परिलक्षित करने वाले केन्द्रों की स्थापना करने का भी आव्हान किया। मिश्र शुक्रवार को बीकानेर में महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे।

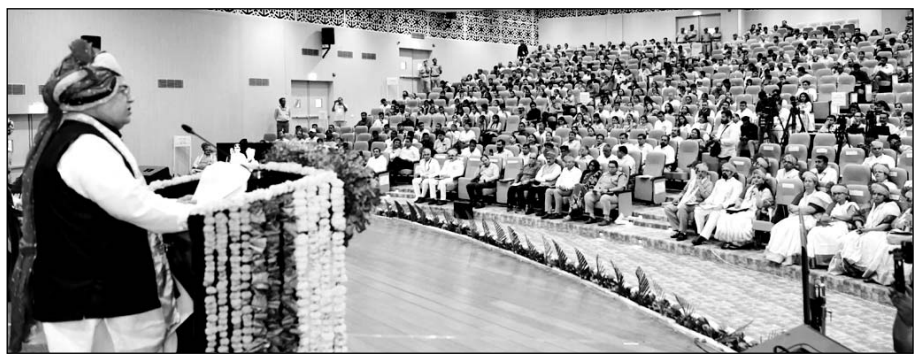

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को राज्यपाल कलराज मिश्र ने संबोधित किया।

- **राज्यपाल ने 54 स्वर्ण पदक प्राप्त कर्ताओं में 44 छात्राएं होने पर प्रसन्नता जताई तथा कहा कि छात्राओं का प्रदर्शन उत्साहजनक है**

राज्यपाल मिश्र ने बीकानेर को भाईचारे और सद्भाव की संस्कृति से जुड़ा शहर बताते हुए कहा कि यहां साहित्य और संस्कृति की समृद्ध परंपरा रही है। उन्होंने डॉ. छगन मोहता, यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', अजीज आजाद आदि साहित्यकारों और उनके लिखे का उल्लेख करते हुए बीकानेर की लघु चित्र शैलियां, उस्ता कला, मथेरण कला, लोक संगीत, नृत्य आदि को भी स्मरण किया। उन्होंने कहा कि स्थानीय साहित्य, कला संस्कृति के प्रकाश में महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय नई पीढ़ी को दिशा दें। उन्होंने विश्वविद्यालयों में शोध और अनुसंधान की ऐसी परम्परा बनाने की भी आवश्यकता जताई जिससे हम अपनी धरोहर को संरक्षित कर सकें। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा वही सार्थक है, जिसमें पाठ्य पुस्तकों के साथ विद्यार्थी जीवन-कौशल के साथ परिवेश की समझ से जुड़ सके, जिसमें नवीन विचार और शोध के लिए विद्यार्थी उत्सुक हो। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति सब तक पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के स्तंभों पर आधारित है। इस नीति का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो सभी नागरिकों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में विकसित करके देश के परिवर्तन में सीधे योगदान देने में सक्षम करने से जुड़ी है। उन्होंने नई शिक्षा नीति को विश्वविद्यालयों में पूरी तरह से लागू करने और रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम निर्माण पर भी जोर दिया।

मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय ऐसे पाठ्यक्रम निर्मित करें, जिसमें स्थानीय पर्यटन संभावनाओं के साथ स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण की दिशा-दृष्टि बन सकें। उन्होंने शिक्षा के जरिए विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक शक्तियों को परिपुष्ट और विकसित किए जाने पर भी कार्य करने की आवश्यकता जताई। राज्यपाल ने 54 स्वर्ण पदक प्राप्त कर्ताओं में 44 छात्राएं होने पर प्रसन्नता जताई तथा कहा कि छात्राओं का यह प्रदर्शन उत्साहजनक है। लड़कियों को यदि अवसर मिलते हैं तो वे जीवन में तेजी से उत्कर्ष की ओर बढ़ती हैं। उन्होंने महिला शिक्षा एवं सशक्तीकरण के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की।

मिश्र ने इससे पहले कला संकाय की छात्रा दिव्या हर्ष को कुलाधिपति पदक एवं शिक्षा संकाय की छात्रा किरण शर्मा को कुलपति पदक प्रदान किया। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों में श्रेष्ठ विद्यार्थी को "महाराजा गंगासिंह अवार्ड" और खेलकूद प्रतियोगिताओं में अव्वल प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को "महाराजा करणी सिंह खेल अवार्ड" देने की शुरुआत की भी सराहना की। उन्होंने विश्वविद्यालय के 21वें स्थापना दिवस के लिए सभी को बधाई प्रेषित की।

कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत कर विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी दी गई। अष्टम दीक्षान्त समारोह में परीक्षा वर्ष 2021 में उत्तीर्ण हुए 1 लाख 26 हजार 880 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गई। वहीं इसी वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 54 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। दीक्षान्त समारोह में ही 1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2021 तक के 39 विद्यार्थियों को विद्या-वाचस्पति की उपाधि भी प्रदान की गई।

राज्यपाल ने लेफ्टिनेंट कर्नल किशन सिंह शूटिंग रेंज, महर्षि भारद्वाज भवन के विस्तार कार्य का शिलान्यास किया। संत मीरा बाई सभागार में महाराजा गंगा सिंह की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण किया गया। सत्र 2022-23 के लिए विश्वविद्यालय योग विभाग की प्रियंका को महाराजा गंगा सिंह अवार्ड तथा चूरू बालिका महाविद्यालय की छात्रा निकिता लाम्बा को महाराजा करणी सिंह खेल अवार्ड प्रदान किया गया। समारोह में 1 से 6 जून तक विश्वविद्यालय में आयोजित इंडोर गेम, योगा, प्रश्नोत्तरी, रंगोली, गायन, नृत्य, भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स में कांस्य पदक प्राप्त करने वाली निकिता लाम्बा को 3 लाख रुपए प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। समारोह में विश्वविद्यालय के विभिन्न क्रियाकलापों को प्रदर्शित करने वाली दीक्षा स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम में बीकानेर पूर्व से विधायक सिद्धी कुमारी, खाजूवाला विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल, बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास, श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम सहित शिवबाड़ी महंत विमर्शानंद महाराज, विषेशाधिकारी राज्यपाल गोविंदराम जायसवाल, अतिरिक्त कुल सचिव डॉ. बिठ्ठल बिस्सा, वित्त नियंत्रक अरविंद बिश्नोई, उप कुल सचिव डॉ. गिरिराज हर्ष, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजाराम चोयल सहित समस्त स्टाफ और विद्यार्थी मौजूद रहे। कुलसचिव हरि सिंह मीणा ने आभार व्यक्त किया।

राशिफल शनिवार 8 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, आर्द्रा नक्षत्र सांय 7:42 तक, गंड योग सांय 6:27 तक, कौलव करण दिन 3:56 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रंभा तीज व्रत है और जिलहिज मु.मास 12 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:18 से 9:01 तक, चर 12:26 से 2:08 तक, लाभ-अमृत 2:08 से 5:33 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:15

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मकर

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मीन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

ओवरफ्लो होकर नहर टूटी, किसानों की सिंचाई बारियां प्रभावित

गजसिंहपुर, (निसं)। नहरों में पेड़ टूटकर गिरने व मलबा पुलिया में फंसने के बाद शुक्रवार को पानी ऑवरफ्लो होने से नहर टूट गई। जानकारी मिलने पर किसानों ने नहर पर पहुंचकर नहर को बांधने का प्रयास शुरू कर दिया। काश्तकार ट्रैक्टर-ट्रॉलियों व कस्सी फावड़े लेकर नहरें के पटड़े को बांधने में जुट गए। नहर टूटने की सूचना मिलते ही आस-पास गांवों के किसान भी बड़ी संख्या में पहुंच गए और अपने स्तर प्रयास करने लगे।

- **नहरों में पेड़ टूटकर गिरने व मलबा पुलिया में फंसने से नहर टूट गई थी**
- **काश्तकारों ने आठ घंटे की मशक्कत के बाद कटाव को बांधा**

आरबी नहर लोवर साइट के अध्यक्ष मदन भादू ने बताया कि आरबी नहर में गीता भवन के पास अलसुबह कटाव आ गया। सुबह करीब पांच बजे नहर में 30 फीट का कटाव आ गया। नहर के कटाव को बांधने के लिए जेसीबी मशीन व ट्रैक्टर-ट्रॉलियों का सहारा लिया गया। करीब सात-आठ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद नहर के कटाव को बांधा गया। वहीं, जल संसाधन विभाग के श्रीराम बादिया ने भी मौके पर पहुंचकर वास्तुस्थिति का जायजा लिया। नहर में कटाव आने के बाद बीरानी खेत पानी से जलमग्न हो गए, जिसके चलते एक बार के लिए आने-जाने का रास्ता भी बंद हो गया।

आरबी नहर के अध्यक्ष चरण सिह ने बताया कि नहर के कटाव को बांधने के लिए जेसीबी मशीन, पांच ट्रैक्टर ट्रॉलियां, लोडर मशीन व चौकलेन मशीन की सहायता से नहर के कटाव को बांधा गया। इस मौके पर काश्तकार विनोद स्वामी का नहर के कटाव को बांधने में विशेष योगदान रहा। नहर कटाव बांधने में भादवांवाला व फाजूवाला के किसान हरजीत सिंह, राकेश भांभू, रामकुमार जाखड, बलवंत बुडिया, रामस्वरूप लोहरा, द्वारका रोझ, इन्द्राज, आलोक सहित बड़ी संख्या में किसानों ने सहयोग गया।

मरणोपरांत नेत्रदान करवाया

भीलवाड़ा, (निसं)। युवा सौरभ बाबेल आकस्मिक निधन से दुनिया से तो विदा हो गए, पर काया के राख होने से पहले नेत्रों का दान करने से दो नेत्रहीन व्यक्तियों के जीवन में नई रोशनी आ सकेगी।

महेश कुमार बाबेल के सुपुत्र सौरभ के निधन होने पर श्री महावीर युवक मण्डल सेवा संस्थान भीलवाड़ा की प्रेरणा से परिजनों ने उनके नेत्रदान के लिए सहमति व्यक्त की। रामस्नेही हॉस्पिटल एवं आई बैंक की टीम ने परिवार के निवास पर पहुंचकर दोनों नेत्रों का सफलतापूर्वक उत्सर्जन किया। नेत्रदान के लिए बाबेल परिवार की पहल की सराहना करते हुए महावीर युवक मण्डल ने उनका भी अभिनंदन किया।

बेटिकट यात्रा के 23 हजार मामलों में रेलवे ने 1.15 करोड़ रुपए वसूले

जोधपुर, (कासं)। रेलवे ने ट्रेनों में बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों के विरुद्ध अपने सघन टिकट जांच अभियान को और तेज करते हुए एक माह में 23 हजार मामलों से 1 करोड़ 15 लाख रुपए का राजस्व वसूल करने में सफलता हासिल की है।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने बताया कि डीआरएम पंकज कुमार सिंह के नेतृत्व में जोधपुर मंडल पर चलाए जा रहे सघन टिकट जांच अभियान को ग्रीष्मावकाश के दौरान और अधिक प्रभावी बनाया गया है जिसके तहत टिकट चेकिंग स्टाफ ने मई माह में उत्कृष्ट कार्य करते हुए बिना टिकट व अनियमित टिकट पर यात्रा समेत अन्य 23 हजार 370 कुल मामलों से 1 करोड़ 15 लाख 26 हजार 789 रुपए का राजस्व वसूल किया है। उन्होंने बताया कि जांच अभियान के दौरान ट्रेनों व स्टेशनों पर पकड़े गए 13 हजार 591 बिना टिकट यात्रियों से 35 लाख 59 हजार 987 रुपए जुर्माना सहित 70 लाख 19 हजार 393 रुपए का राजस्व वसूल किया गया है। इसके अतिरिक्त इस अवधि के दौरान ट्रेनों में अनियमित यात्रा के 8 हजार 619 मामलों से 43 लाख 70 हजार 556, बिना बुक सामान के मामलों से 1 हजार 490 व धूम्रपान के 81 मामलों से 16 हजार 500 रुपए किराया व जुर्माना वसूला गया है।

- **गंदगी फैलाने के मामलों में 1.18 लाख की वसूली की गई**

अभियान के तहत मई माह में ट्रेनों व स्टेशनों पर गंदगी फैलाने के 1075 मामले पकड़े गए हैं जिनके विरुद्ध कार्रवाही करते हुए टिकट चेकिंग दलों ने 1 लाख 18 हजार 850 रुपए का जुर्माना वसूल किया।